S.S. College, Jehanabad
Class – M.A. (Psychology) Semester – I (Session-2019-2021)
Subject – Psychology Paper – I (CC – I)
Teacher's Name – Dr. Viveka Nand Sharma

Date – 13.02.2021

Topic – Unit-4 (Intelligence)

Guilford's Tridimensional Theory of Intelligence or Guilford's Model of Intelligence.

आधुनिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत बुद्धि मनोवैज्ञानिकों के लिए एक प्रमुख अध्ययन विषय रहा है। मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों के आधार पर बुद्धि के स्वरूप और इसके सिद्धान्तों की विस्तृत व्याख्या की है। जिस प्रकार बुद्धि की परिभाषा एवं इसके स्वरूप के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों में मतभेद रहा है, ठीक उसी प्रकार इसके स्वरूप की व्याख्या करने के लिए सिद्धान्तों के प्रतिपादन में भी विवाद बना हुआ है। इस विवाद के फलस्वरूप बुद्धि के अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ है जिनमें से Guilford (1967) द्वारा प्रतिपादित बुद्धि का Tridimensional theory एक प्रमुख सिद्धान्त है जो Spearman, Thorndike तथा Thurstone के सिद्धान्त से काफी भिन्न है। इन्होंने Spearman के सामान्य बुद्धि के सम्प्रत्यय को स्वीकार नहीं किया। इन्होंने Thurstone के समूह-तत्व सिद्धान्त को भी स्वीकार नहीं किया और कहा कि यह सिद्धान्त बुद्धि के सभी क्रियाओं या तत्वों को समाविष्ट करने में असमर्थ रहा है। इन्होंने Thurstone के विचार को स्वीकार किया कि बुद्धि अनेक योग्यताओं या तत्वों का संगठन है। इसलिए Guilford के सिद्धान्त को बहुतत्व-सिद्धान्त भी कहा जाता है। लेकिन इन्होंने Thurstone इस विचार को नहीं माना कि बुद्धि में केवल सात प्राथमिक तत्व शामिल हैं। इन्होंने यह दावा किया कि बुद्धि की संरचना 120 तत्वों से हुई है जो तीन विमाओं में विभाजित है। चूँकि इन्होंने बुद्धि के तीन विमाओं को माना इसलि-

इनके सिद्धांत को Tridimensional theory या बुद्धि संरचना सिद्धांत (Structure-of-intellect theory) भी कहा जाता है। Guilford ने Thurstone के समान कारक-विश्लेषण प्रविधि की सहायता से बुद्धि के संरचनात्मक तत्वों को पहचानने का प्रयास किया। इन्होंने 120 संरचनात्मक तत्व दिये। इन तत्वों को तीन विमाओं (dimensions) में विभाजित किया जाता जो निम्नांकित हैं —

1. संक्रिया (operations)
2. विषय वस्तु (content)
3. उत्पादन (Products)

उपर्युक्त तीनों विमाओं की संक्षिप्त व्याख्या इस प्रकार है —

1. संक्रिया (operations):-

संक्रिया से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले मानसिक प्रक्रिया के स्वरूप से होता है। किसी कार्य को करने में व्यक्ति द्वारा की गई मानसिक क्रियाओं का स्वरूप क्या है, वही उसकी संक्रिया में होती है। Guilford ने संक्रिया के आधार पर मानसिक योग्यताओं को छः भागों में बाँटा है — मूल्यांकन (Evaluation), अभिसारी चिन्तन (Convergent thinking), अपसारी चिन्तन (Divergent thinking), स्मृति धारण (memory retention), स्मृति अभिलेख (memory recording) तथा संज्ञान (Cognition)। एक उदाहरण के सहारे इसे अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। मान लिया जाय कि किसी व्यक्ति को सर. विश्वास के गुण-दोष को बताते हुए एक छोटा लेख लिखने के लिए कहा जाता है। इस उदाहरण में उपर्युक्त छः मानसिक योग्यताओं में से evaluation की प्रक्रिया होते पायी जायेगी। उसी तरह से यदि किसी व्यक्ति को ईंट का असाधारण प्रयोग बताने के लिए कहा जाय तो इसमें छः में से किस-सी संक्रिया का उपयोग आवश्यक होगा। निश्चित-रूप से इस अवस्था में होने वाली संक्रिया को अपसारी चिन्तन (divergent thinking) कहा जाता। इसी तरह विभिन्न शब्दों, विभिन्न चित्रों या इसी तरह की अन्य अन्य उत्तेजनाओं की समानता तथा रिक्त पूर्ण करने की योग्यता को संज्ञान की संज्ञा दी जाती है।

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

② विषय-वस्तु (Contents) :—

इस विमा से तात्पर्य उस क्षेत्र से होता है जिनके items या सूचनाओं के आधार पर संक्रियाएँ (operations) की जाती हैं। Guilford के अनुसार ऐसे पदों या सूचनाओं को पाँच भागों में बाँटा गया है जो पाँच प्रकार हैं — दृष्टि (Visual), श्रवण (Auditory), सांकेतिक (Symbolic), शाब्दिक (Semantic) तथा व्यवहारपरक (behavioral)। Visual (दृष्टि) तथा auditory (श्रवण) आकृतिक होते हैं। दृष्टि आकृति का तात्पर्य दृष्टि आकार की सूचना से है। जैसे - रंग आकृति, आकार, विन्यास इत्यादि। श्रवण आकृति से तात्पर्य श्रवण आकार की सूचना से है। जैसे - संगीत ध्वनि, Pitch, melody इत्यादि। सांकेतिक से तात्पर्य ऐसी सूचना से है जो चिह्नों (Signs) के रूप में होते हैं। जैसे - अक्षर, संख्या इत्यादि। शाब्दिक (Semantic) से तात्पर्य ऐसी सूचना से है जिसका सम्बन्ध अर्थ से होता है। जैसे - शाब्दिक विचार, वाक्य इत्यादि। व्यवहारपरक का अर्थ मानव क्रिया-प्रतिक्रिया में निहित अशाब्दिक सूचना है। जैसे - अपने तथा दूसरों के अभिवृत्तियों, आवश्यकताओं इत्यादि की पहचान करना।

③ उत्पादन (Products) :—

इस विमा से तात्पर्य किसी विशेष प्रकार की विषय-वस्तु द्वारा की गई संक्रिया के परिणाम से होता है। इस तरह के परिणाम को Guilford ने छः भागों में बाँटा है जो इस प्रकार है — इकाई (Units), श्रेणी (classes), सम्बन्ध (Relations), पद्धति (Systems), रूपान्तरण (Transformations) तथा आशय (~~Transformations~~ implications)। इकाई से तात्पर्य वस्तुओं, व्यक्तियों, आकारों इत्यादि से है। जैसे विभिन्न शब्दों को पहचानना, शब्दों को परिभाषित करना इत्यादि। श्रेणी से तात्पर्य एक या अनेक गुणों के आधार पर वस्तुओं के वर्गीकरण से है। जैसे - दी गई वस्तुओं या उदाहरणों को भिन्न-भिन्न श्रेणियों में उनके समान तथा असमान गुणों के आधार पर विभाजित करना। सम्बन्ध से तात्पर्य वस्तुओं के बीच सम्बन्ध से है। यह किसी रूप का होता है। पद्धति का तात्पर्य व्यवस्थित अथवा पारस्परिक भागों के संगठन या प्रतिरूप से है। जैसे - किसी बालक से वर्णमाला के विषय बता सकता है कि ABC के बाद कौन-सा अक्षर होगा। दी गई सूचना या विषय के परिवर्तन

परिवर्तन या संशोधन को स्थानान्तरण कहते हैं। जैसे - यदि मनुष्य को कुछ दोनों तरफ देखा जाता है। आकार का अर्थ होता है सूचना के आधार पर भविष्यवाणी या पूर्वानुमान करना है। जैसे - एक ने समाज की दशा को देखकर भी परिणामों का अनुमान लगाना इत्यादि।

इस तरह से स्पष्ट है कि Guilford ने अपने सिद्धान्त में बुद्धि की व्याख्या तीन विमाओं के आधार पर किया है और प्रत्येक विमा के कई भाग हैं। संक्रिया (operation) विमा के 6 भाग, विषय-वस्तु (contents) विमा के 5 भाग तथा उत्पादन विमा के 6 भाग हैं। इस तरह Guilford के अनुसार बुद्धि में कुल मिलाकर 6×5×6 = 180 factors होते हैं। स्पष्ट है कि Guilford के सिद्धान्त से बुद्धि के स्वरूप तथा उसकी संरचना का विस्तृत एवं आधुनिक वर्णन करता है, उतना न तो Spearman के सिद्धान्त से और न Thurstone के सिद्धान्त से मिलता है। लेकिन कुछ मनोवैज्ञानिकों ने Guilford के बुद्धि सिद्धान्त की कटु आलोचना की है जो इस प्रकार है—

① Guilford के सिद्धान्त की आलोचना करते हुए Phares (1984) ने कहा कि Guilford का सिद्धान्त वास्तव में एक सिद्धान्त के रूप में नहीं लगता है बल्कि ~~बुद्धि~~ इसमें बुद्धि का एक वर्गीकरण करने की एक पद्धति कहना अधिक उपयुक्त जान पड़ता है।

② Gagne (1977) ने Guilford's model की आलोचना करते हुए कहा कि यह Model बुद्धि के स्वरूप तथा संरचना की समुचित व्याख्या करने में पूरी तरह सक्षम नहीं है।

③ Brody & Brody (1976) ने भी अपने अध्ययन में पाया कि Guilford द्वारा बताये गये अलग-अलग भाग ~~संरचना~~ ज्यादा कुछ भी स्पष्ट दिखलाई नहीं पड़ता है।

④ Guilford के सिद्धान्त के empirical studies उपलब्ध पर्याप्त संख्या में नहीं मिलता है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद Guilford का सिद्धान्त बुद्धि के स्वरूप की व्याख्या करने में एक विशेष स्थान रखता है और यह सिद्धान्त बुद्धि तथा सृजनात्मकता (creativity) जैसे पहलुओं की व्याख्या करने में ~~इसका~~ भी काफी सफल रहा।